मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में ओशो के समन्वयवादी विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा

की

पी.एच.डी. (शिक्षा शास्त्र)

आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूप रेखा (2015)

निर्देशक — शोधकर्ता

डा0 पहुप सिंह त्यागी — अवनेन्द्र सिंह परिहार

संकाय प्रमुख — विभागाध्यक्ष

प्रो0 विभा निगम — प्रो0 आनन्द प्यारी

शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा – 282005

1.1.0 अध्ययन की पृष्ठभूमिः–

प्रकृति और मनुष्य एक दूसरे में अप्रत्याशित रूप से घुले–मिले हैं तथा प्रकृति परिवर्तन के क्रम में निरन्तर प्रवाहमान है। प्रकृति की गोद में ही मनुष्य जन्म लेता है जिसका प्रारम्भ एक आदिम युग की आधारशिला रहा है। आदिम युग का मनुष्य वहशी था, जंगली था। वह गुफाओं में जीवन व्यतीत करता था तथा सभ्यता और संस्कृति से उसका कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु सर्वविदित है कि समय का चक्र एक अश्व की तरह धरती को रौंदता चला जाता है। जब प्रकृति ने बदलाहट की नैसर्गिक करवट ली तो कच्चा माँस खाने वाले मनुष्य ने 'अग्नि' से पके भोजन को अपना आहार बनाने के स्रोत इजाद किए। यही समय था जब मानव की बुद्धि आदिम युग के पटाक्षेप को अन्जाम देने लगी और नया युग करवटें लेने लगा। इस परिवर्तन के साथ ही सम्पूर्ण मानव जाति विवेक पूर्ण मनुष्य के रूप में विकसित होने लगी तथा व्यक्ति समाज, प्रथायें, अपने–अपने रीत रिवाज, सभ्यतायें और संस्कृति के रूप में सौंदर्य को ओढ़ने लगीं। परन्तु बुद्धि के विकास ने मनुष्य को एक विशेष चिन्तन की ओर प्रेरित किया तथा उसकी गहन बौद्धिकता में विभिन्न प्रश्न खड़े होने लगे जैसे विश्व का स्वरूप क्या है? इसकी उत्पत्ति किस प्रकार और क्यों हुई ? विश्व का कोई प्रयोजन है अथवा यह प्रयोजनहीन है? आत्मा क्या है? जीव क्या है? ईश्वर है अथवा नहीं? ईश्वर के अस्तित्व का क्या प्रमाण है? जीवन का चरम लक्ष्य क्या है? नैतिक निर्णय का विषय क्या है? व्यक्ति और समाज में क्या सम्बन्ध है? आदि। इन प्रश्नों का उत्तर मानव अनादि काल से देता आ रहा है और भविष्य में भी निरन्तर देता रहेगा। क्योंकि ये सभी प्रश्न सीधे मनुष्य जीवन को प्रभावित करते हैं। अतः संसार के सभी देशों व समाज ने मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ व सामन्जस्य पूर्ण बनाने के लिऐ विभिन्न दर्शन, संस्कृति व शिक्षा को उत्कृष्ट साधन के रूप में स्वीकार किया। जिससे सम्पूर्ण समाज को एक सुदृढ़ सुसंस्कृत, जीवन की ओर ले जाया जा सके। यदि मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को एक समन्वय की दृष्टि से देखा जाय तो स्पष्ट होता है कि दर्शन ही जीवन की दिशा व दशा को निर्धारित करता है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति दार्शनिक होता है। इस सिलसिले में हक्सले का यह कथन स्पष्ट करता है कि –

"हम सबों का विभाजन दार्शनिक और अदार्शनिक के रूप में नहीं, बल्कि कुशल और अकुशल दार्शनिक के रूप में ही सम्भव है।"[1]

---

[1] 'भारतीय दर्शन की रूपरेखा', पृष्ठ सं. 1

वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय दार्शनिकों ने वैयक्तिक तथा सामाजिक समस्याओं को लेकर ही चिन्तन प्रारम्भ किया तथा मानवीय जीवन को सन्तुलन प्रदान करने के उद्देश्य से ही एक सुसंस्कृत संस्कृति का निर्माण किया जिसमें जीवन के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, नैतिक, अध्यात्मिक, भौतिक आदि अनेकों जीवन–मूल्यों पर सूक्ष्म दृष्टि डाली। यही चिन्तन मनुष्य का सम्बन्ध शिक्षा से जोड़ता है क्योंकि शैक्षिक दर्शन, दर्शनशास्त्र की अनुप्रयुक्त (applied) शाखा है शिक्षा ही वह साधन है जहाँ दर्शन द्वारा निर्धारित जीवन के लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। अतः शिक्षा के उद्देश्य वे साधन हैं, जिनके द्वारा जीवन के मूल्यों तक पहुँचा जा सकता है। लेकिन वर्तमान परिस्थिति में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि शिक्षा के द्वारा हम क्या उपलब्ध करना चाहते हैं? शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी कौन है? क्या शिक्षा ज्ञान प्राप्ति का साधन मात्र है? या कुछ और? शिक्षा से किस प्रकार की योग्यताएँ, क्षमताएँ तथा आदतें अर्जित करने की आवश्यकता है? आदि अनेकों प्रश्न मानव जीवन में द्वन्द्व उत्पन्न करते–रहते हैं। इस पीड़ा को भारतीय दार्शनिकों ने समझा तथा मानव कल्याण को 'सर्वव्याप्त कर्म' का सूचक माना। यह तथ्य प्राचीन ग्रन्थ मनुस्मृति के इस श्लोक से भी स्पष्ट होता है–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, या कश्चिद् दुःख भागभवेत्।। (मनु स्मृति)

परन्तु जब युग अपनी केंचुली बदलता है, तब वस्तुतः नये युग का श्री गणेश हो जाता है, तब व्यक्ति व समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन हो जाते है।

यह निर्विवाद सत्य है कि आज का युग आमूल–चूल परिवर्तन की ओर संकेत कर रहा है। क्योंकि 21वीं सदी को विज्ञान की सदी माना जा रहा है जहाँ प्रत्येक विचार, 'प्रमाण व पदार्थ' के रूप में सीमांकन चाहता है तथा सम्पूर्ण विश्व का एक दूसरे की जीवन पद्धति से परिचित होना और सामंजस्य स्थापित करना मौलिकता बनती जा रही है। इस कारण प्रत्येक मनुष्य जब सभी मान्य धर्मों द्वारा स्थापित जीवन मूल्यों को विज्ञान के परिवेश में स्वयं की स्वतंत्रता के परिप्रेक्ष्य में आधार बनाने का प्रयास करते हैं तो समस्त समाज अन्तरविरोधों से घिर जाता है। जिसके परिणामस्वरूप हमारा जीवन मानसिक दबावों व तनावों में उलझ गया है। जिस कारण मनुष्य पीड़ा, व्यथा, विषाद, क्लेश आदि से आक्रान्त है। अतः जब परस्पर विरोधी आवेग हमारे समस्त प्रयत्नों को गतिहीन व अशक्त कर दें तथा मनुष्य स्वयं को अनिश्चय की स्थिति में पाये उस स्थिति में नाना प्रकार के प्रश्न प्रकट होते हैं जैसे– एक सन्तुलित जीवन कैसे बिताया जाये? कैसे अपनी बुद्धि व मनस् स्थिति

को समन्वित किया जाय? शोक, पीड़ा, सामाजिक कुरीतियाँ धार्मिक उन्माद, अत्याचार, व्यभिचार, भ्रष्टाचार, मानसिक विक्रतियाँ, भेदभाव आदि से समाज को कैसे निजात मिल सकेगी? और कैसे निश्चित करें कि वर्तमान समय में हमारे कर्त्तव्य क्या है? आदि। इस सब के बावजूद अहम् प्रश्न यह उठता है कि – मनुष्य एक कर्मठ, तेजस्वी, उत्साही व सरस जीवन कैसे व्यतीत करें?

अतः आज पूर्ण व्यवहारिक दृष्टिकोण लिए मानुष्य–मूल्य के सम्बन्ध में घोर संकट का सामना कर रहा है। यदि व्यक्ति दमनात्मक प्रक्रिया से मूल्य पालन की उपेक्षा करता है तो समाज, राष्ट्र, परिवार आदि की जमीं–जमाई व्यवस्था खण्डित होती है इसके विपरीत यदि मनुष्य को तर्कपूर्ण नैतिकता का आचरण करने के लिए बाध्य किया जाता है तो पृथ्वी की मनुष्यता मनोरोगी होने के कगार पर खड़ी हो जायगी। यह सर्वकालिक सत्य है कि जब भी कोई युग समस्याओं से जकड़ा हुआ होता है तो उसका उद्धार करने का एकमात्र साधन शिक्षा का नवीनीकरण के रूप में उपलब्ध होना है। अतः यह कहना स्वाभाविक है कि शिक्षा की प्रक्रिया ही मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया है। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए 'शिक्षा' को एक ऐसी दृष्टि चाहिए जो 'विज्ञान व मनोविज्ञान' के पहलू को ध्यान में रखते हुए जीवन–मूल्यों के शैक्षिक वतावरण को एक समन्वयात्मक आधार देने में समर्थ हो सकें। वर्तमान समय में मूल्यों को उपदेश के रूप में ग्रहण करना पर्यारत व उपयुक्त नहीं माना जाता है बल्कि विद्यार्थियों को मूल्यों का विश्लेषण करना उनका स्पष्टीकरण करना तथा उन पर शोध व तर्क पूर्ण सम्यक चिन्तन करना आना चाहिए। विश्वव्यापी व विकासोन्मुख भारतीय समाज की समकालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और शिक्षा सम्बन्धी वास्तविकताओं के सन्दर्भ में इनको भलीभांति समझाना व समझना आवश्यक हें आधुनिक समय में विकास की कसौटी पर सभी देश दस्तक देना चाह रहे है। सही व स्थायी विकास की कसौटी पर स्वयं को स्थापित करने के लिए मूल्य शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाने लगा। इस दृष्टिकोण से मूल्य शिक्षा को निम्नांकित उद्देश्य रखने होते है:

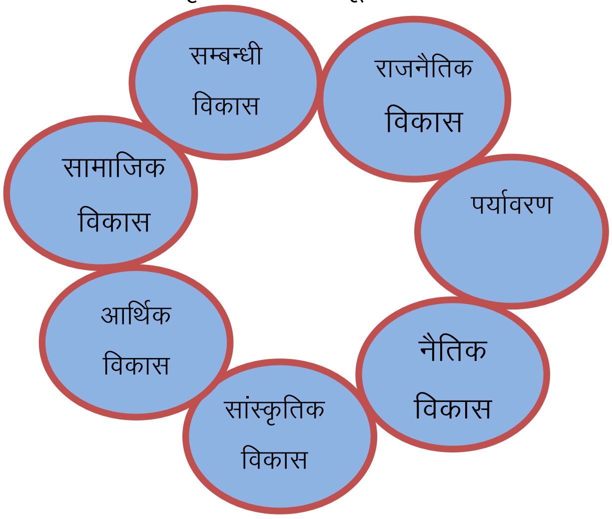

चि0सं0 1

अतः मूल्य शिक्षा के वर्तमान परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में किस स्वरूप में विकसित किया जाय ? इस सम्बन्ध में 'ओशो' ने कहा है किः

''जिस दिन भी शिक्षा विद्रोही होगी, उसी दिन एक विल्कुल ही नयी मनुष्ता का जन्म हो सकता है। विद्रोह से अर्थ है– मूल्यों में क्रान्ति''

निश्चित ही जीवन मूल्य गलत हैं अन्यथा मनुष्य के जीवन में यह अशांति यह अर्थहीनता यह कुरूपता, यह हिंसा यह ईर्ष्या, यह अधर्म नहीं होता।

आज के युग को मूल्यों के घोर संकट से उबारने में यही दृष्टिकोण संजीवनी का कार्य कर सकता है। जिसमें जीवन के प्रत्येक ध्रुव को जैसे– स्त्री–पुरुष, पाप–पुण्य, आस्तिक–नास्तिक, भौतिक–अध्यात्मिक, जीवन–मृत्यु, भोग–योग, गृहस्थ–सन्यास, समाज–व्यक्ति, शरीर व आत्मा तथा पूरब व पश्चिम आदि से सम्बन्धित मूल्यों के प्रति समन्वयात्मक दृष्टि रखते हुए समग्रता के साथ स्वीकारा जाय।

1.2.0 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व–

अभिनव भारत, अपने अतीत के बोझ से दबा हुआ है क्योंकि लगभग सभी प्रबुद्ध वर्ग ने आधुनिक समाज के लिए मूल्यपरक शिक्षा का नवीन ढाँचा परम्परागत तथा इतिहास की पृष्ठभूमि पर तैयार किया। यह ठीक वैसे हुआ जैसे– नयी बोतल में पुरानी 'हाला'।

यद्यपि यह सच है कि प्रत्येक देश ने सुसंस्कृत नागरिकों के निर्माण की महत्ता समझते हुए विभिन्न आधुनिक विधियों व शैक्षिक तकनीकी को आधार बनाया जिससे मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रभावित भी हुआ। तथा विज्ञान की सदीं में मनुष्य ने आकाश से लेकर पाताल तक के कई रहस्यों को प्रकाशवान किया यहाँ तक कि 'मानव क्लोन' भी तैयार करने में महारथ प्राप्त कर ली। परन्तु परिस्थितयाँ पुनः प्रश्न खड़ा करती है कि इस स्थिति तक आने के पश्चात् भी क्या मनुष्य स्वयं को मूल्यहीनता, अश्पृश्यता, रंगभेद, नस्लभेद, धार्मिक उन्माद, मानसिक व शारीरिक विकृतियाँ विश्व–बन्धुत्व की दिशा में अवरोध तथा आतंकवाद आदि से मुक्त कर पाया? इससे यह स्पष्ट होता है कि कहीं न कहीं हमारी शिक्षा प्रक्रिया में लचीलापन रह जाता है। आज शिक्षा का स्वरूप कैसा हो? इस सम्बन्ध में ओशो का यह विचार भी प्रासंगिक हो सकता है।

"मैं ऐसी शिक्षा चाहता हूँ जहाँ आज की जिन्दगी ही लक्ष्य है, भविष्य कुछ है ही नहीं। आज जी रहा हूँ वही सब कुछ है। इसको जानूँ, समझूँ, पहचानूँ और इसको

पहचानने, जानने, समझने में, कैसी हवा चारों तरफ सहयोगी होगी, वह हम शिक्षा संस्थाओं में दें।"[1]

अतः आज शिक्षा के ऐसे ढाँचे की रूपरेखा तैयार होनी चाहिए। जो आभासी विरोधी दावों में एक 'समन्वयात्मक' सामंजस्य स्थापित कर सके, पुराने एवं नये युग में समन्वय, भौतिक व अध्यात्म में समन्वय, विज्ञान व धर्म में समन्वय, परम्परा तथा परीक्षण में समन्वय, क्रिया व चिन्तन में समन्वय आदि का समन्वय ही प्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

इनमें से प्रत्येक में एक अपनी सच्चाई है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। जीवन के कई पक्ष है जिससे इसमें जटिलता आई है। शिक्षा का जीवन के प्रति एक समन्वयवादी दृष्टिकोण फलित हो इसकी 'सुवास' ओशो के प्रमाणिक अद्वैतता से युक्त इस विचार में स्पष्ट दिखाई दी।

"मैं मनुष्य को अखण्ड करना चाहता हूँ। मैं कहता हूँः न तुम्हारे भीतर कुछ बुरा है और न तुम्हारे भीतर कुछ भला है। तुम तो मात्र ऊर्जा हो ऊर्जा अनेक रूपों में प्रकट हो सकती है। ऊर्जा एक सीढ़ी है। लेकिन सीढ़ी का जो नीचा से नीचा पायदान है, वह भी सीढ़ी के ऊँचे से ऊँचे पायदान से जुड़ा है। वे पृथक नहीं है, विपरीत नहीं है, वे एक ही इन्द्र धनुष के रंग है।"[2]

1.3.0 समस्या का प्रादुर्भाव–

निश्चित ही आज भारत का जो परिदृश्य शोधकर्ता के मस्तिष्क में उभरा है, उसमें देश का सम्पूर्ण समाज विभिन्न द्वन्द्वों से आक्रान्त दिखायी दे रहा है। यही द्वन्द्वात्मक समस्यायें भारत को विकसित राष्ट्र में बाधा पहुँचा रही हैं, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति एक ऐसी उलझन में जकड़ चुका है, जहाँ वह यह निश्चित नहीं कर पा रहा है कि पूरब व पश्चिम की जीवन शैली, योग व भोग में चुनाव, नर्क व स्वर्ग की मान्यता, भौतिक व अध्यात्म की सार्थकता, व्यक्ति व समाज का विकास आदि में कौन सा पक्ष सार्थक है? इन्हीं समस्या के समाधान हेतु शोधकर्ता का ध्यान 'ओशो' विचार धारा की ओर आकृष्ट हुआ तथा ओशो के दर्शन का विशद अध्ययन कर उसे आत्मसात करते हुए पाया कि ओशो ने अपने विचारों से सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित किया। अतः शोधकर्ता के मस्तिष्क में प्रश्न आया कि क्या ओशो के विचार मानवीय जीवन को नयी दिशा दे सकते हैं? क्या ओशो का दर्शन समाज में

---

[1] शिक्षा में क्रान्ति, संस्करण–6, पृष्ठ सं.–15
[2] ओशो वर्ल्ड, मार्च 2015, पृ.सं. 16

मान्य हो सकेगा? क्या ओशो की धारा मनुष्य को द्वन्द्वात्मक स्थिति से मुक्त कर पायेगी? क्या ओशो विचार धारा समाज को मानसिक रोगों से मुक्त करने में सहायक हो सकेगी?

इन्हीं समस्याओं के समाधान से प्रेरित होकर शोधकर्ता की 'शोध समस्या' का सृजन हुआ।

1.4.0 समस्या कथन–

मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में ओशो के समन्वयवादी विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

1.5.0 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या–

1.5.1 मूल्य शिक्षा

"किसी के जीवन को दिशा–निर्देश एवं अर्थवत्ता देने के लिए जो मानदण्ड, लक्ष्य अथवा उपयोग का चयन किया जाता है, उन्हें मूल्य कहा जाता है, मूल्य संश्लेषणात्मक शक्तियाँ हैं जो किसी के व्यक्तित्व में सम्पूर्णता ला देती हैं।"[1] (फिलोमेन स्कूडो)

मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है, उनका धर्म है एवं उनका अस्तित्व है। हमारे लिए मूल्यों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है अपितु मूल्यों को आचरण में लाने के लिये शिक्षा का सुनियोजित ढाँचा भी विकसित करना है। क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने में प्रमुख साधन है। इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि –

"हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र निर्माण होता है मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है।"[2]

अतः मूल्य शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है और इसके माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र और सन्तुलित विकास करने का प्रयास किया जाता है।

1.5.2 ओशो–

ओशो शब्द लैटिन भाषा के ओशोनिक से लिया गया है, जिसका अर्थ है सागर में विलीन हो जाना। यह दो शब्दों ओ व शो से मिलाकर बना है जहाँ 'ओ' का अर्थ है परम सम्मान, प्रेम और अहोभाव व 'शो' का अर्थ है चेतना का बहुआयामी विस्तार। ओशो शब्द से

---

[1] मूल्य शिक्षा (क्या, क्यों और कैसे), पृष्ठ सं. 201.
[2] शिक्षा के दार्शनिक व समाजशास्त्रीय आधार, पृष्ठ सं. 3.

7.

विश्व विख्यात भारतीय दार्शनिक 'आचार्य रजनीश' को सम्बोधित किया गया है। जिसे उनके शिष्यों ने एक नयी विचार धारा के प्रारम्भ स्वरूप उद्‌घाटित किया था। अतः ओशो एक ऐसी विचार धारा का नाम है जो मनुष्य को पूरी समग्रता के साथ स्वीकार करती है तथा जीवन के सभी पक्षों में व्याप्त असन्तुलन को एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

1.5.3 समन्वयवादी विचार—

व्यक्ति व व्यक्ति के मध्य, परिवार व परिवार के मध्य, जाति व जाति के मध्य, धर्म व धर्म के मध्य, पूर्व व पश्चिम के मध्य, भौतिक व अध्यात्म के मध्य, विज्ञान व अध्यात्म के मध्य व्याप्त विरोधों को समरसता या समन्वय की दृष्टि से अवलोकन करना ही समन्वयवादी विचार है।

डॉ. महावीर मल लोढ़ा ने समन्वयात्मक विचार की पुष्टि इस प्रकार की है—

"हमें विज्ञान से अध्यात्म की ओर भौतिकता से अध्यात्मिकता की ओर, भोग से योग की ओर प्रयाण करके समन्वय से सार्थक जीवन की तलाश करनी चाहिए।"[1]

1.6.0 अध्ययन के उद्देश्य—

1. ओशो के जीवन दर्शन का अध्ययन करना।
2. मूल्य शिक्षा के संदर्भ में ओशो के समन्वयादी विचारों का संकलन करना।
3. मूल्य शिक्षा के उद्‌देश्यों के संदर्भ में ओशो के समन्वयवादी विचारों का विश्लेषण करना।
4. मूल्य शिक्षा के पाठ्‌यक्रम के संदर्भ में ओशो समन्वयवादी विचारों का विश्लेषण करना।
5. मूल्य शिक्षा की शिक्षण अधिगम प्रकिृया के संदर्भ में ओशो के समन्वयवादी विचारों का अध्ययन करना।
6. मूल्य शिक्षा के लिए विद्यालयी वातावरण के संदर्भ में ओशो के समन्वयवादी विचारों का अध्ययन करना।
7. मूल्यपरक शिक्षा सम्बन्धी ओशो की समन्वयवादी दृष्टि की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

---

[1] नैतिक शिक्षाः विविध आयाम, पृष्ठ सं. 243

1.7.0 समस्या का औचित्य–

आधुनिक युग को हम मूलतः पूँजीवादी युग कह सकते हैं इस भौतिकवादी युग में अध्यात्मिक और नैतिक मूल्य छिन्न–भिन्न हो गये तथा धन, पूँजी और सम्पत्ति ही मनुष्य का सर्वस्व है। समाज में व्यक्ति के आपसी सम्बन्धों से प्रेम, करुणा, दया, सहानुभूति पूर्णतः नदारद हो चुके है। स्त्री–पुरुष के बीच, पति–पत्नी के मध्य, भाई–भाई के बीच पिता–पुत्र, शिक्षक–छात्र, शासक व शासित के बीच सम्बन्ध सूत्र टूट चुके हैं। सम्पूर्ण समाज के व्यक्ति सभ्यता और संस्कृति का मुखौटा चढ़ाकर दुनियाँ को ही नहीं, स्वयं को भी छलता है। अतः इस युग को घोर मूल्यहीनता का युग, या मूल्यों के संकट का युग कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी। अतः यही कारण है कि एन.सी.ई.आर.टी., साईं सत्य साईं एजूकेशन इन ह्यूमन वैल्यूज़ ट्रस्ट, नेशनल इंस्टीट्यूट आफ ओपन स्कूलिंग, नई दिल्ली आदि अनेकों विद्यालय, विश्वविद्यालय, विश्व भर में मूल्यों को संरक्षित करने के प्रयास कर रहे हैं।

शोध से सम्बन्धित साहित्य में अभ्यंकर, एस. (1997) "स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण और अन्तरराष्ट्रीय मूल्य ह्रास और वर्तमान समय में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता"। पटेल, के.एम. (1981) "सत्य साईं संगठन द्वारा संचालित संस्थान में मूल्योन्मुखी शिक्षा का अध्ययन"। गुप्ता, एन.एल. (1995) "महाभारत में मूल्य व शिक्षा का अध्ययन", यादव, मनोज (2009) "बुद्ध की शिक्षा में मानवाधिकार एवं मानव मूल्यों की संकल्पना एवं वर्तमान मूल्य की प्रासंगिकता।" पाण्डेय, उर्मिला (2010) "महर्षि पंतजलि एवं बुद्ध के शैक्षिक विचारों में मूल्य परिप्रेक्ष्य शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन।" शर्मा, प्रभा (1999) "श्रीमद्भगवत गीता व धम्मपद में मूल्यबोध तुलनात्मक अध्ययन।" आदि के साथ ही दार्शनिक विचारों पर शोध– अग्रवाल, कुसुम (1998) "रामतीर्थ का शैक्षिक दर्शन", शर्मा, राधारानी (2006) "राधाकृष्णनन का शैक्षिक दर्शन व इसकी सामाजिक उपादेयता", गुप्ता, उर्मिला (2009) "दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचार व आधुनिक भारत में उपादेयता" आदि शोध कार्यों का अध्ययन किया गया।

इन शोधों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अभी तक सभी विचारकों ने मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में परम्परागत दृष्टि का समर्थन किया तथा ऐसे किसी शोध की जानकारी प्राप्त नहीं हुयी जिसमें एक समन्वयात्मक दृष्टि के साथ मूल्य शिक्षा का परिमार्जन किया गया हो।

9.

वर्तमान मूल्य संकट के कारणों को एज्यूट्रेक्स मासिक पत्रिका (2007) में परविन्दर कौर और रविशुक्ल ने वर्तमान मूल्य संकट के तीन कारण बताये

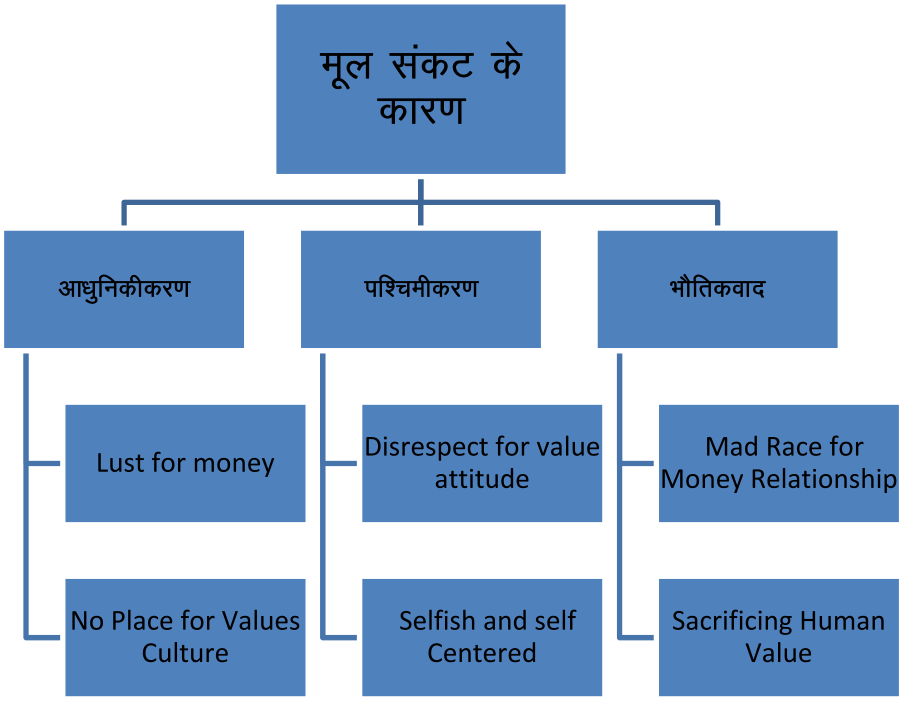

चि0सं0 2

यही कारण है कि आज की बदलती परिस्थितियों में समुचित व्यवहार करना मनुष्य के लिये सारगर्भित नहीं हो पा रहा है। जिसके कारण मनुष्य पूरब–पश्चिम, भोग व योग, पूँजीवाद व समाजवाद आदि अनेकों द्वन्द्वो से घिरा है जिससे उसे समुचित आचरण के चुनाव में विषमता उत्पन्न हो रही है। अतः आज ऐसे शोध की आवश्यकता है जो समाज में एक सन्तुलन बना सके और जीवन के विभिन्न पक्षों में समन्वय स्थापित कर सके। शोधकर्ता ने पाया कि अभी तक ओशो के दर्शन से सम्बन्धित ऐसा कोई शोध प्रस्तुत नहीं किया गया है जिसमें उनके समन्वयवादी विचारों का अध्ययन किया गया हो।

1.8.0 वर्तमान में ओशो दर्शन की मूल्य मीमांसा

मनुष्य के मनोवैज्ञानिक एवं साँस्कृतिक विकास के कारण मूल्य नये एवं भौतिकवादी दृष्टिकोण के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। परन्तु कुछ शाश्वत मूल्य (दया, सत्य अहिंसा, समर्पण, मातृत्व आदि) हर काल में स्वीकार्य किये जाते है इसी सत्य को आधार मानते हुए डा0 रमेश देशमुख जी ने मूल्यों का वर्गीकरण निम्न चरणों में कृमबद्ध किया:–

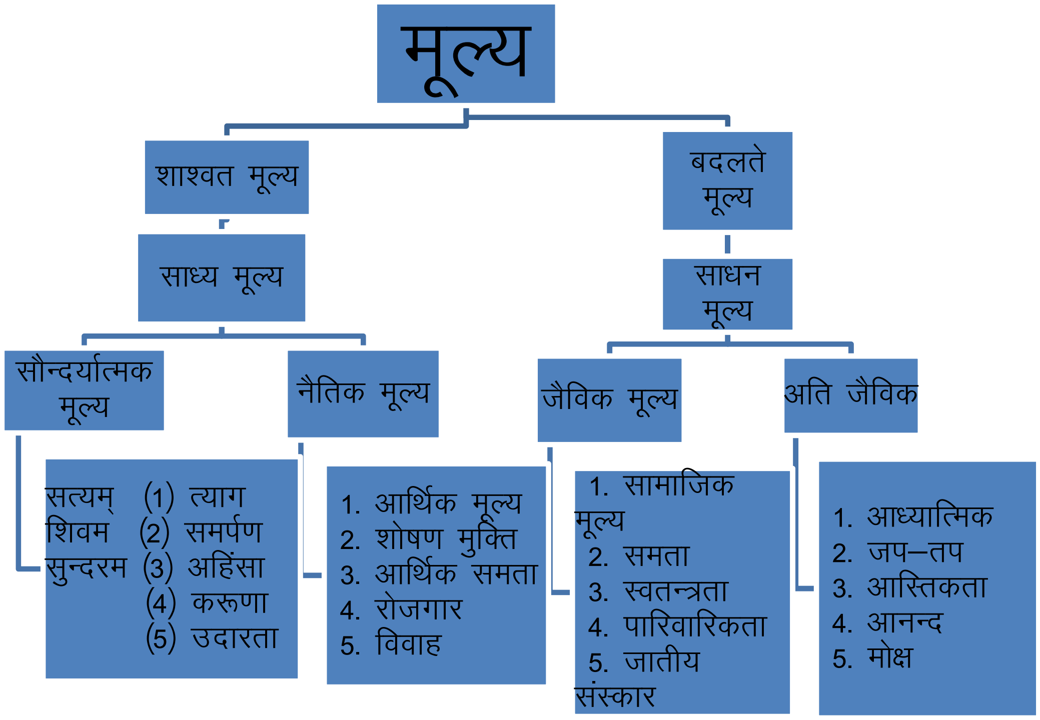

चि0सं0 3

वर्तमान समय में हम एक संक्रमण काल में प्रवेश करते जा रहें है। यही कारण है कि हमारे प्राचीन परम्परागत मूल्यों में कुछ पूर्णतः विघटित हो गये है और शेष विघटित होने की कगार पर है। क्योंकि मूल्यों के आधार भूत तत्व 'धर्म' विवाद के चक्रव्यूह में फंस चुका है।

आधुनिक समय में युवा मन बौद्धिक समस्याओं से परेशान व भौचक्का है विज्ञान और तकनीकी ने मनुष्य को धर्म के सि़द्धान्त से विचलित कर दिया यदि यह स्वीकार किया जा सके कि विज्ञान व तकनीक मूल्य सम्बन्धी अवधारणाएं है तो अभौतिकी व भौतिकी के मध्य एक समन्वय स्थापित कर जीवन में आधुनिक जीवन मूल्य स्थापना के लिए कार्य किया जा सकता है। मूल्यों को आधुनिक परिवेश में सार्थक एवं गुणात्मक बनाने के लिए महर्षि अरविन्द, विवेकानन्द एंव राधाकृष्णन ने धर्म विज्ञान तथा अध्यात्म के मध्य समन्वय स्थापित किया, परन्तु आज 21 वीं सदी में जीवन के सभी आयामों पद्धितियों, शिक्षा, दर्शन, परम्पराएं, ज्ञान–विज्ञान राजनीति, सामाजिक संरचना, सास्कृति परिवेश तथा आर्थिक परिवर्तन से पारस्परिक सघर्ष बढ़ता जा रहा है। इसके कारण व्यक्ति एक विभ्रांति में उलझ गया है। क्यों कि पुराने शास्त्र, परम्परायें व वर्तमान शिक्षा जीवन मूल्यों को जिस ढंग से प्रशिक्षित करने में लगी है उसका व्यवहारिक जगत में स्वीकारें एक भ्रांति पैदा करती है।

इसी द्वन्द में ओशो एक क्रान्तिकारी विचारों के साथ समाज को नवीन दर्शन की झलक देते हुए दिखायी दिये ओशो के समन्वयवादी दर्शन को शिक्षा में उपायदेयता की दृष्टि से निहारे तो उनके दर्शन को मुख्यतः तीन बिन्दुओं से स्पष्ट कर सकते है

1. तत्व मीमांसा
2. ज्ञान मीमांसा
3. मूल्य मीमांसा

तत्वमीमांसाः– ओशो ने पदार्थ तथा चेतना को तीसरी सत्ता के रूपों के सन्दर्भ में देख है। ओशो का मानना है कि जड़ व चेतन मात्र अभिव्यक्ति है। अतः तत्व की पदार्थ सम्बन्धी अवधारणा वे नहीं स्वीकारते है। ओशो चेतना पर बल देते है ओशो द्वारा चैतन्य को मूल तत्व माना गया है तथा पदार्थ व अपदार्थ को उसका प्रतिफलन माना है। यदि तत्व मीमांसा की दृष्टि से देखें तो ओशो स्पष्ट करते है कि

- अस्तित्व ही जगत का मूल्य है
- अस्तित्व अपरिमित एवं अपरिभाषेय है।
- अस्तित्वगत केवल स्वयं शून्य होने में उपलब्ध होता है।
- अस्तित्व की सापेक्षता में व्यक्ति संवेदनशील होता है।

ज्ञान मीमांसाः– ज्ञान ही अस्तित्व बोध का अंतिम द्वार है। ओशो बुद्धि और मन के अतिरिक्त नाभि को ज्ञान का मूल मानते है। ओशो ज्ञान की सूचना, सापेक्ष ज्ञान तथा व्यक्ति के स्तर पर स्वयं की अनुभूति को शिखर पर रखते है।

मूल्य मीमांसाः– ओशो का शिक्षा दर्शन तत्व, ज्ञान और मूल्य मीमांसा में एक समरूपता का बोध कराता है। ओशो सभी प्रकार के मूल्यों को एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण देते है। ओशो अस्तित्वगत तत्व को स्वीकार करते है जहाँ मूल्य 'शून्य' होता है। मूल्य समाज द्वारा संचालित किये जाते है। ओशो का मानना था कि समाज भौतिक जगत से अस्तित्वगत मन के पार जाने के लिए मूल्यों का निर्माण करता है।

ओशो मानवीय मूल्यों के असन्तुलन की ओर इशारा करते हुए स्पष्ट करते है कि

''निश्चय ही जीवन मूल्य गलत है अन्यथा मनुष्य के जीवन में यह अशान्ति, यह अर्थहीनता, यह विभ्रांति क्यों होती।''

ओशो का विचार था कि अगर शिक्षा अतीतोन्मुख की बजाय भविष्योन्मुख हो तो निश्चित ही संसार में भौतिक समृद्धि के साथ–साथ आत्मिक समृद्धि का विस्ताार भी शिखर पर होगा। अतः ओशो ने जीवन के किसी बिन्दु को निम्नता या शिखरता में नहीं बाँटा बल्कि प्रत्येक पहलू में एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण के साथ मनुष्य की मूल्यपरक शिक्षा का श्री गणेश किया। वे उसी व्यक्ति को नैतिक होने का पात्र समझते थे जो समन्यात्मक दृष्टिकोण के साथ नैतिकता व अनैतिकता में स्वतन्त्रता पूर्वक चुनाव कर सके।

ओशो का मनुष्य में मूल्य स्थापना के सम्बन्ध में विचार था–

''बीसवी सदी का आदमी पहली दफा मॉरल हो सकता है नैतिक हो सकता है, क्योंकि चुनाव और इसके पास मौका है कि वह चाहे तो अनैतिक हो जाए और चाहे तो नैतिक हो जाए।''

यहाँ ओशो इस ओर संकेत करते है केवल बल पूर्वक नैतिकता, अनुशासन प्रेम, दया, देशभक्ति, धर्म आदि अनेकों मूल्यों की शिक्षा नहीं दी जा सकती इससे मनुष्य जाति दमन का शिकार हो चुकी है परन्तु 21वीं सदी का मनुष्य पहली बार स्वतन्त्र होने की स्थिति में आया है जो सही व गलत की व्यवहारिकता का चुनाव करने में व्यक्ति स्वयं उत्तरदायी है। अतः स्पष्ट है कि ओशो का दर्शन विभिन्न मूल्यों के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों छोरों को स्वीकार कर वास्तविक सकारात्मकता का पोषण करता हुआ प्रतीत होता है– ओशो तुलसी दास के 'भय बिनु होहि न प्रीति' कथन को एकदम नकारते हुए कहते है कि– ''नयी नीति भय केन्द्रित नहीं: ज्ञान केन्द्रित होगी।'' इस ओशो वर्तमान सदी में मूल्यहीनता का सबसे बड़ा कारण शास्त्रों और सिद्धान्तों द्वारा जीवन पर थोपे गये समाधानों को मानते है।

अतः ओशो दर्शन की विभिन्न ध्रुवों पर एकरूपता को स्पष्ट करने के लिए निम्न मूल्यों का वर्गीकरण सहयोगी होगा–

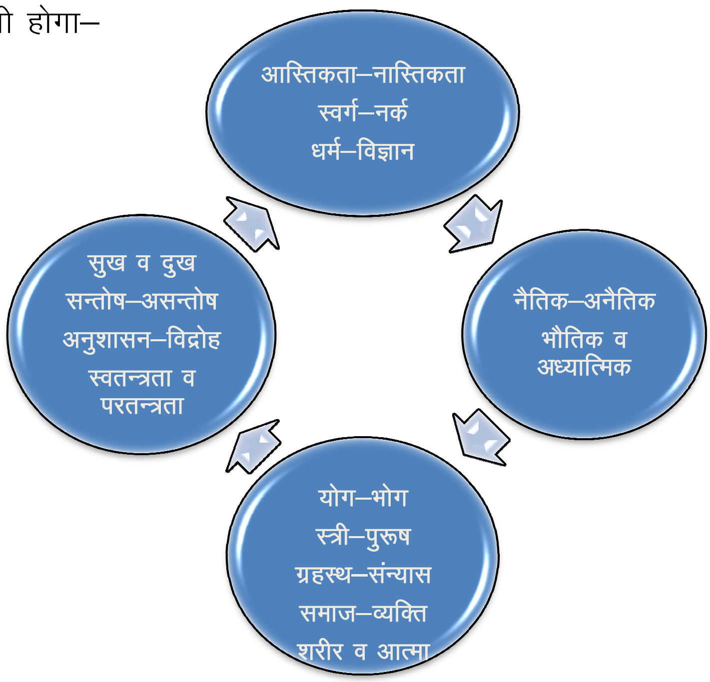

चि0सं0 4

शोधकर्ता द्वारा ओशो के विचारों का गहन अध्ययन करने से धीरे–धीरे स्पष्ट होने लगा कि ओशो मनुष्य को उसके निज विकास की ओर ले जाने का निडरता, स्वतंत्रता व सजगता के साथ प्रयास करते हैं।

शोधकर्ता ने ओशो के विचारों में पाया कि नये मनुष्य की दशा व दिशा को ओशो ने योग व भोग, गृहस्थ व संन्यास, जीवन व मृत्यु, चैतन्य व विज्ञान, समाज व व्यक्ति, भौतिक व अध्यात्म, पुरुष व स्त्री, शरीर व आत्मा, पूंजीवाद व समाजवाद, नास्तिक व आस्तिक, आदि अनेकों जीवन के पहलुओं को एक नवीनता के साथ समन्वयात्मक रूप से प्रस्तुत किया है। इसी कारण शोधकर्ता द्वारा बहुत ही आशा व सम्भावना की दृष्टि से ओशो के मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में समन्वयात्मक विचारों का अध्ययन कर आधुनिक शिक्षा में एक सफल शिक्षा प्रणाली हेतु प्रोत्साहन देने का प्रयास करने का निश्चय किया। शोधकर्ता अपने इस अध्ययन के आधार पर आस्वस्त है कि ओशो दर्शन से इस सदी के मनुष्य में मूल्यों को जीवन्तता के साथ व्यवहारिक तल पर लाया जा सकता है तथा इससे व्यक्ति, समाज तथा वर्तमान राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय उद्देश्यों की वाँछित पूर्ति की जा सकती है।

1.9.0 शोध समस्या का सीमांकन–

शोध को मॉलिक व उद्देश्यपूर्ण बनाने हेतु समस्या के अध्ययन क्षेत्र को सीमित रखना अनिवार्य है। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन का सीमांकन निम्नानुसार किया गया है:

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में ओशो के दार्शनिक विचारों के संकलन हेतु ओशो के प्रवचन पर आधारित मूल पुस्तक 'गीता दर्शन' शोध की आधारशिला होगी।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन ओशो के दर्शन से समन्वयात्मक विचारों के एकत्रीकरण तक सीमित रहेगा।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में ओशो के समन्यवयात्मक विचारों को मूल्य आधारित शिक्षा तक सीमित रखा जायेगा।

1.10.1 अध्ययन की विधि एवं प्रक्रिया–

प्रस्तावित अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित विधि एवं प्रक्रिया का प्रयोग किया जायेगा–

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रकृति दार्शनिक है। दार्शनिक शोध के लिए अन्तुर्वस्तु विश्लेषण विधि को उत्कृष्ट विधि का महत्त्व दिया जाता है। इस का प्रयोग शोध कार्य को विधिवत प्रस्तुत करने हेतु किया जात है। यह विधि विषयवस्तु विश्लेषण विधि, पाठ्य वस्तु विश्लेषण

विधि, आलेख विश्लेषण विधि एवं पुस्तकालय विधि के नाम से भी अभिधेय है। यह वह विधि है जिसके द्वारा प्रलेख या अध्ययन सामग्री के अन्तर्निहित तथ्यों को ज्ञात किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की दर्शनिक प्रकृति के कारण अन्तर्वस्तु विश्लेषण विधि ही उपयुक्त विधि है। अतः शोध अध्ययन के लिए अन्तर्वस्तु विश्लेषण विधि को आधार बनाया जाएगा।

1.10.2 प्रक्रिया

प्रस्तावित अध्ययन को निम्न चरणों में पूरा किया जाएगा –

1. सर्वप्रथम ओशो के व्याख्यान पर लिखी गयी पुस्तकों , ऑडियो सी0 डी0 का अध्ययन किया जायेगा।
2. शोध अध्ययन के मूल स्रोत के रूप में ओशो के प्रवचनों पर आधारित 'गीता दर्शन' पर लिखे गये आठ भागों का अध्ययन किया जायेगा।
3. अध्ययन के पश्चात उन विचारों का संग्रहण किया जायेगा, जिसमें समन्वयवादी विचार तथा वह संकल्पनाएँ, है जो मूल्य शिक्षा के प्रति रूझान पैदा करती है।
4. शोध के द्वितीयक स्रोत के रूप में उन विद्वानों के साहित्य का अध्ययन किया जायेगा जिन्होने ओशो विचारधारा से प्रभावित हो साहित्य सृजन किया है।

1.11.0 निष्कर्ष एवं निहितार्थ–

ओशो दर्शन में निहित दार्शनिक तत्त्वों पर आधारित शिक्षा दर्शन में मूल्यों की शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्षों को समग्र रूप में प्रस्तुत किया जाएगा और उसके आधार पर निष्कर्षों एवं निहितार्थों पर पहुँचा जाएगा।

1.12.0 अध्याय योजना–

सम्पूर्ण शोध–प्रबन्ध निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया जायेगा।

प्रथम अध्याय	–	अध्ययन की पृष्ठभूमि
द्वितीय अध्याय	–	ओशो का जीवन–दर्शन।
तृतीय अध्याय	–	ओशो का समन्वयवादी दर्शन
चतुर्थ अध्याय	–	मूल्य शिक्षा एवं मूल्यों का वर्गीकरण
पंचम अध्याय	–	मूल्यों के सन्दर्भ में ओशो के समन्वयवादी विचारों का विश्लेषण
षष्ठ अध्याय	–	मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में ओशो के समन्वयवादी विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता
सप्तम अध्याय	–	निष्कर्ष एवम् सुझाव

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डागर, बी. (1992) *शिक्षा तथा मूल्य,* हरियाणा साहित्य अकादमी, प्रथम संस्करण,.

प्रसाद, आर0 (1969), *आचार्य रजनीश समन्वय, विश्लेषण और संसिद्ध,* मोती लाल बनारसीदास, बंगलो रोड जवाहर नगर, दिल्ली–7, प्रथम संस्करण,

रुहेला, प्रो. एस0 (2009) *मूल्य शिक्षाः क्या, क्यों, कैसे,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 28/115, ज्योति ब्लॉक, संजय प्लेस, आगरा–2, प्रथम संस्करण,

वर्मा, जी.एस.(2008) *मूल्य शिक्षा, पर्यावरण एवं मानवाधिकार,* इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, प्रथम संस्करण,

शर्मा, श्रीमती आर.के. (2010) मूल्य शिक्षा एवं मानव अधिकार, राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा, संस्करण– पंचम संस्करण।

लोढ़ा, एम0 (2007) *नैतिक शिक्षाः विविध आयाम,* राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, द्वितीय संस्करण,

त्यागी, जी0 (2008) *मूल्य शिक्षा* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा – पंचम संस्करण

शर्मा, आर.ए. (2010) *तत्व मीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्य मीमांसा एवं शिक्षा,* सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ–250 001.

पाण्डेय, आर0 (2008) *मूल्य शिक्षण,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2, चतुर्थ संस्करण,

अंतर्वीणा (2003) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि. 50 कोरेगाँव पार्क पूना, तृतीय, संस्करण, सितम्बर

कृष्ण स्मृतिः (2006) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, छठवाँ संस्करण, जुलाई,

क्रांतिबीज , (2004) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, पाँचवा संस्करण, दिसंबर,

जीवन रहस्य (2002) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, दूसरा संस्करण, अप्रैल,

ध्यान सूत्र एवं अपूर्व अभियान (2002), रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, संस्करण

ध्यान क्या है (2012), डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली 20, X-30 ओखला इंडस्ट्रियल ऐरिया, फेज–2, नई दिल्ली पाँचवा संस्करण

नये समाज की खोज (2004), रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, दूसरा संस्करण, दिसंबर

पंतजति योग सूत्र (2005),पूना, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, संस्करण *महावीर या महाविनाश* (2000), रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, पाँचवा संस्करण .

मैं मृत्यु सिखाता हूँ (1996), रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, द्वितीय संस्करण,

मैं धार्मिकता सिखाता हूँ धर्म नहीं (2005) पूना, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, छठवाँ संस्करण,

राय, पारसनाथः *अनुसंधान परिचय,* (2005),लक्ष्मी नारायण अग्रवाल अनुपम प्लाजा 1 ब्लॉक नं 50, संजय प्लेस आगरा, पाँचवा संस्करण .

शिक्षा में क्रान्तिः (2007), पूना, रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, छठवाँ संस्करण,

वैराग्य आनन्दः *'शिक्षा ओशो की दृष्टि मे,* (2006), इशिता क्रिएशन्स वाराणसी ।

सिन्हा, एच0 (1993), *भारतीय दर्शन की रूप रेखा,* मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली 07 पाँचवा संस्करण

संभोग से समाधि की ओर (2003) डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली 20,X-30 ओखला इंडस्ट्रियल ऐरिया, फेज–2, नई दिल्ली पाँचवा संस्करण

स्वर्ण पाखी था जो कभी और अब है भिखारी जगत का (1994) रेबल पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पूना, द्वितीय संस्करण

पत्र–पत्रिकायें–

ओशो टाइम्स (मासिक पत्रिका).(2014) ताओ पब्लिशिंग प्रा.लि., 50 कोरेगाँव पार्क, पुणे 411001

ओशो टाइम्स, (मासिक पत्रिका).(2014) ताओ पब्लिशिंग प्रा.लि. 50 कोरेगाँव पार्क, पुणे 411001

यैस ओशोः (मासिक पत्रिका).(2013) एम.पी. प्रिंटर्स, बी–220,फेज–2, नोयडा–201305,

ओशो बर्ल्डः (मासिक पत्रिका).(2015) ओशो बर्ल्ड फाउण्डेशन, सी–5 / 44, सफदरजंग, नई दिल्ली.

अनंत की पुकार (मासिक पत्र) (2015) नवयुगान्तर प्रेस, 160, शारदा रोड, मेरठ,

ओशो धारा (मासिक पत्र) (2015) मुरथल, हरियाणा,